पानः निराली शान

NATIONAL INSTITUTE OF HYDROLOGY
ROORKEE- 247667 (U.P.)

भारत में इतना प्रचलित और लोकप्रिय पान भारतीय मूल का न होकर मलेशिया का मूलवासी है जो मूल रुप से जावा और मलेशया के जंगलों में पाया जाता है। भारत में पान की खेती सिर्फ पान की चबाने योग्य पत्तियों के लिये ही की जाती है। पान बहुवर्षी, एकलिंगाश्रयी बेल है। इसका अर्धकाष्ठिक तना अपस्थानिक जड़ो की सहायता से फैलता है।

पान का पत्ता, जिससे छोटा-बड़ा कोई भी अपरिचित नही, प्राचीन काल से ही प्रयोग में लाया जाता रहा है। मुगल सम्राटों के दरबार का दृश्य हो तो पान का बीड़ा मुंह में डाले सम्राट सिंहासन पर विराजमान होंगे। घर में पूजा पाठ हो या शादी ब्याह, पान का साबुत पत्ता, सुपारी के साथ भगवान की मूर्ति के सम्मुख चढ़ाया जायेगा।

इसकी 5-20 सेमी. पत्तियां मुख्यतः अडांकार, हृदयाकार, पीताम या गहरी हरी चमकीली होती हैं। भारत में प्रायः नर पौधे की खेती की जाती है। इसलिऐ बेल पर फल नहीं आते। भारत के विभिन्न भागों में भिन्न प्रकार के पान उगाये जाते हैं। पान की खेती के लिये उष्ण कटिबन्धीय जलवायु आवश्यक है। पान के लिये उपयुक्त तापमान 25-40 सैल्सियस, वर्षा 225-440 सेमी. प्रतिवर्ष आवश्यक है। इसके लिये धूप व हवा की कम मात्रा में आवश्यकता होती है। भारत में पान की खेती लगभग 40,000 हैक्टेयर भूमि में की जाती है। इससे 1000 करोड़ रुपये तक की वार्षिक मुद्रा का अर्जन होता है।

पान यद्यपि चूना कत्थे के साथ खाने के काम में लाया जाता है लेकिन फिर भी इसके बहुत से लाभप्रद गुण हैं। पान तो पान ही होता है परन्तु भारत जैसे विशाल देश में इसे स्थानीय नामों से जाना जाता है, जैसे देसी, बंगला, साँची, बनारस का बनारसी, मगध का मघई या मोहोबा का महोबा आदि।

पान का कैंसर से सम्बन्ध

पान का पत्ता अकेले खाने से कैंसर नहीं होता अपितु सुंगधित सुपारी, तम्बाकू आदि के साथ खाने से कैंसर हो सकता है। बोस्टन यूनिवर्सिटी मैडिकल सैंटर के दातों के एक वैज्ञानिक के अनुसार सुपारी दातों के कैंसर का मुख्य कारण है। सुपारी में पाया जाने वाला एल्कलांइड एरीकोलीन (नाइट्रोजन युक्त कार्बनिक यौगिक) एक ऐसा अंश है जो कैंसर का कारण बन सकता है।

पंकज कुमार गर्ग, वरिष्ठ शोध सहायक